रामेश्वर लाल खंडेलवाल 'तरूण' के काव्य में भाषा सौन्दर्य

DR. Renu Bhatia

HoD, Hindi Department

G.V.M Girls College Sonipat

कविवर 'तरूण' ऐसे प्रातिभ साहित्यकार हैं, जिनके काव्य में सौन्दर्य की अनूठी एवं सरस धारा प्रवहमान है। उनके पास एक ऐसी सौन्दर्य–पारखी दृष्टि एवं गहरी संवेदना है, जिसके माध्यम से वे अपने चहुं ओर के परिवेश में से मानवीय तथा प्राकृतिक सौन्दर्य को खोज कर, उसको अनुपम भावचित्रों एवं शब्दरूपों में उतार लाने की अद्‌भुत सामर्थ्यशक्ति रखते हैं। रंगों, गंधों, ध्वनियों एवं शब्दों के प्रति उनकी जागरूकता अनूठी एवं द्रष्टव्य है।

'भाष्' धातु से निर्मित 'भाषा' अनुभूति–अभिव्यक्ति का एक मात्र साधन है। डॉ॰ सुमन काव्य भाषा के सन्दर्भ में कहते हैं – 'अर्थमयी चेतना का वैश्वरी रूप ही भाषा है।'[1] आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी तो अभिव्यंजना के सम्पूर्ण सौन्दर्य का आधार ही भाषा को मानते हैं – 'वर्णों की चारूता से लेकर शब्दां के रूप–सौन्दर्य और अर्थ–सौन्दर्य का आंकलन करते हुए कवि अपनी भाषा प्रतिभा का निर्माण करता है, जिससे अभिव्यंजना का सम्पूर्ण सौन्द्रय प्रस्फुटित होता है।'[2] शम्भुनाथ सिंह तो सबल भाषा रखने वाले कवि को ही सच्चा कवि मानते हैं – भाषा का व्यवहार यों तो सभी करते हैं, पर सच्चा कवि उसे अपनी यशवर्तिनी बनाकर रखता है। वह शब्द–शिल्प एवं भाषा की प्रकृति से पूर्ण परिचित होता है। भाषा की प्रकृति से परिचित होने के कारण वह काव्य भाषा में आकर्षण एवं सौन्दर्य उत्पन्न करके उसे उत्कृष्ट बनाता है।'[3]

जहाँ तक प्रश्न विवेच्य कवि 'तरूण' जी का है वह अपनी अभिव्यक्ति को कृत्रिमता से दूर, स्वाभाविक, स्वछन्द, जीवन सम्पृक्त और आवरण रहित रखना चाहते हैं। उनकी 'कहो' कविता में यह तथ्य पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है। –

> कोई सी भी भाषा लो, स्वर लो, रंग लो
>
> त्यौरी लो, तेवर लो, तरंग लो,
>
> देखो, एक क्षण भी मत चूको ....
>
> + + + + +
>
> कुछ कहो।[4]

कविवर 'तरूण' की दीर्घ काव्य यात्रा में छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और स्वछन्दतावाद आदि वादों का आगमन–निगमन हुआ, लेकिन उन की काव्य भाषा किसी वाद–शैलो से सम्पृक्त न होकर अपना स्वतन्त्र अस्तित्व रखती है। कविवर तरूण की

काव्य–भाषा खड़ी बोली है, जिसमे आकर्षण, सौन्दर्यमयता, सबलता एवं स्पष्टता विद्यमान है। कवि शब्द को भाषा का महत्त्वपूण तत्व स्वोकार करते हुए विविध भाषा–स्त्रोतों से शब्द–चयन ही नहीं करते, बल्कि उनमें कांट–छांट कर नया निखार भी ला देते हैं। दूसरी ओर भाषा को प्रभावोंत्पादक एवं सबल प्रयोग हेतु व्यंजना और लक्षणा का अनुपम प्रयोग करते हैं। 'तरूण' काव्य–भाषा को प्राणवान बनाने वाले समस्त अवयवों का विवेचन इस प्रकार है।

शब्द चयन –

शब्द भाषा की लघुतम इकाई होते हुए भी भाव–प्रकाशन का मूल माध्यम है। डॉ॰ भोलानाथ तिवारी के अनुसार – 'शब्द भाषा का लघुतम सार्थक घटक है।[5] कविवर तरूण का कथन है कि 'कवि का अपना परम विश्वसनीय संबल अथवा कविता का सबसे मौलिक एवं प्राथमिक उपादान –'शब्द' ही तो है ....(शब्द–जिसमें ऊँचे व गम्भीर प्राणपोषक अर्थ और अतलान्त आशय भरे रहते है।' स्वच्छ, निष्कलुष व कान्तिमान शब्द की कल्पना, तलाश या खोज सर्जनात्मक कवि–चेतना का वस्तुतः परम पुरूषार्थ है।'[6]

इस प्रकार कवि 'तरूण' शब्द को कविता का मौलिक उपादान मानते हुए उसमें स्वच्छता, निष्कलुषता व कान्तिमयता के गुण आवश्यक मानते हैं। वस्तुतः शब्द प्रयोग में उनकी चयन–क्षमता अप्रतिम है। तरूण–काव्य में तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशज सभी प्रकार के शब्द–समूह अपनी पूर्ण सार्थकता के साथ विद्यमान हैं।

तत्सम शब्द –

कवि ने कोमल भावानुभूतियों की अभिव्यक्ति हेतु तत्सम शब्दावली व संस्कृत सूक्तियों का बहुल प्रयोग किया है। लेकिन भाषा में कहीं भी क्लिष्टता का बोध नहों होता, बल्कि ये शब्द–समूह भाव सम्प्रेषण में साधक है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं – युगनद्ध, तादात्म्य, धारित्री, धूम्रपटालियाँ, प्रकोष्ट, संसृति स्पंदन, उज्ज्वल, माणिक्याभ, त्रिवर्ण, स्वातन्त्र्य, वर्तिका, प्रकंपित, उदात्त, तुहिन–बिन्दु इत्यादि।

संस्कृत सूक्तियाँ –

मूहूर्त ज्वलिंत श्रेयों न च धूमाचितं चिरम्, सत्यमेव जयते, अमृतस्य पुत्रः मानव, माता भूमि पुत्रोऽहम पृथिव्या आदि।

'वसन्त' कविता में प्राकृतिक चित्रण हेतु तत्सम शब्दावली का अद्वितीय प्रयोग द्रष्टव्य है –

नव अभक–उज्ज्वल निरभ नभ शुभ आम–तरू पत्र–पत्र पर

सर्व वन–श्री, फुल्ल मञ्जरी–लदे आम्र वल्लरी छत्र पर।

\+ \+ \+ \+ \+

मंजुल कुसुम दृगञ्चल में है धुला आज मृदु सौरभ अञ्चल

प्राची की कञ्चल आभा से उठ मलयानिल करता गुञ्जन।[7]

तद्भव शब्द –

परम्परागत शब्द जब परवर्ती भाषा में विकसित या परिवर्तित रूप में प्रयुक्त होते हैं, तो उन्हें तद्भव शब्द कहते हैं।[8] जहाँ तत्सम शब्दावली भाषा गाम्भीर्य को वर्धित करती है, वहीं तद्भव शब्दावली भाषा में सहजता, स्वाभाविकता एवं माधुर्य की सृष्टि करती है। 'तरूण–काव्य' में तद्भव शब्दों का विस्तार भाषा–सौन्दर्य को निखारने का कार्य करता है। कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं – अँचरा, कन्हैया, झंकार, मनुज, मोल, नीम, धरती, रात, रूपवन्ती, आँख, सिंगार, थाली आदि। 'धरतीमाता' कविता में तद्भव शब्दावली का अनुपम प्रयोग देखिए –

मेरा रोना, मेरा हंसना

मेरा गाना और मचलना –

मेरा तुझका सबकुछ भाता

धरती माता।[9]

देशज शब्दावली –

कविवर 'तरूण' ने ग्राम्य विषयक भावों को अधिक सम्प्रेषणीय बनाने हेतु देशज शब्दों का बहुल प्रयोग किया है। उदाहरणतः – बादर, दूबरी, गोरटी, बालम, माटी, ठौर, दरदरी, संझा, कजरी, टपरी, मड़ैया, चन्दनियाँ, अमराई, गूदड़, व्यालू, कज्जल इत्यादि। 'ग्राम विरहणी दीप जलाती' कविता देशज शब्दावली प्रयोग का अनुपम उदाहरण है तो 'बादरे' शीर्षक कविता में तो देशज शब्द योजना न केवल अभिव्यक्ति सौन्दर्य को वर्धित करती है, बल्कि उसे लोकगीतों की श्रेणी में ला खड़ी करती है –

गदबदे–गदबदे, साँवरे–साँवरे

आ गये बादरे।

केश बिखरे हुए, आँख अंजन–अँजी,

बीजुरी, दोलड़ा स्वर्णकंठी सजी

रूपवन्ती किसी गोरटी की मदिर –

मस्त–माते नयन में सजल याद ले।

आ गए बादरे।[10]

विदेशी शब्दावली –

कवि ने अपनी भावाभिव्यक्ति को अर्थ–सम्प्रेषण में अधिक सक्षम बनाने हेतु विदेशी शब्दों का भी निसंकोच प्रयोग किया है। साहित्यकार अज्ञेय हिन्दी–साहित्य में विदेशी शब्दों के प्रयोग का औचित्य सिद्ध करते हुए कहते हैं कि –'कवि उसी भाषा का प्रयोग करता है, जिसे वह रोज जीता है......... हमारे जीवन को जो शब्द व्यक्त करेंगे, वे ही अनिवार्यतः काव्य में आयेंगे। हम अपनी कार्यों में रोज जिन संदर्भों में जीते हैं, उनके साथ हमने अंग्रेजी शब्द जोड़ लिए हैं तो कविता में उनके बिना कैसे काम चलेगा?[11] कवि तरूण ने जीवन–विसंगतियों, विडम्बनाओं, युग संत्रास, विद्रोह एवं आक्रोश विषयक कविताओं में अंग्रेजी एवं अरबी–फारसी शब्दों का बहुल प्रयोग किया है।

अंग्रेजी शब्द –

चैक, चैम्बर, डिनर, वॉश–बेसिन, ब्लाऊज, बुलेट, डिपार्टमेंट, एब्सर्ड, नीट एण्ड क्लीन, करण्ट, आइसक्रीम, आउटसाईडर, वेस्ट पेपर, शोपीस, रेडियो, पेपरवेट, सेक्रटिरिएट, टयूबलाईट इत्यादि। 'यह आदमी' शीर्षक कविता में समकालीन मानव के विकृत अस्तित्व की यथार्थ अभिव्यक्ति हेतु अंग्रेजी शब्दावली का प्रभावी प्रयोग देखिए –

यह बीसवीं सदी का आदमी

डर्विन का जीवित वनमानुस।

\+ + +

लोडर, डिप्लामैट, एकेडेमिशियन,

कुशाग्र, फुर्तीला और इंटैलीजेंट।[12]

अरबी–फारसी शब्द –

मदरसे, सैलानी, नफ़ासत, शफाफ, हमजोली, गुलजार, करीना, कमाल, मिज़ाज, जाफ़रानी, तुर्शी, मातमपुर्सी, रोशनो, रूबरू, मुबारक, रूतबा, लापरवाह, बेतरतीब, फज़र, नायाब, तूफान, तासीर, नक्शानवीस इत्यादि।

'तरूण' काव्य में विदेशी शब्द प्रयोग के सन्दर्भ में डॉ० गंगाधर का कथन अवलोकनीय है – छायावाद की परिमार्जित शब्दावली में हिन्दी–अंग्रेजी–उर्दू के कई प्रचलित शब्दों को गूंथ देने में उन्होंने (तरूण) अद्‌भुत निपुणता दिखाई है।[13]

क) लोकोक्तियाँ–मुहावर –

कोई भी कवि अपन काव्य में लोकाक्तियों आर मुहावरों का प्रयोग भाषा की समाहार शक्ति को वर्धित करने तथा जटिल भावों की अभिव्यक्ति के लिए करता है, क्योंकि इनका सम्बन्ध जनजीवन से होता है। डॉ० तरूण ने अपने काव्य में लोकोक्तियों एवं मुहावरों का प्रयोग कर अपनी काव्य–भाषा को प्रखर एवं प्रभावी बनाया है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं –

क) चारों ओर चर्चा है ' क्या यह सही है?

कि उसकी मुट्ठो चुपचाप गरम कर दी गई है।[14]

ख) मियां बीबी राजी,

तो क्या करेगा काजी।[15]

ग) अंधकार की पौ बारह है, पांचों उंगली घी में

स्वर्ण सुअवसर आया, करने जो कुछ भी आवे जी में।[16]

उपर्युक्त उदाहरणों में षड्‌यन्त्रकारियों के हाथों की कठपुतली बने सूर्य, निस्वार्थ सेवा के परिणाम, अन्धकार सत्ता के माध्यम से सामाजिक विसंगति को अभिव्यक्त करने मे मुहावरे–लोकोक्तियों ने अहम् भमिका निभाई है।

इस के अलावा कविवर 'तरूण' ने 'सत्ता के घर सत्य कहार बनकर पानी भरता है, बासी बचे न कुत्ता खावे, चिड़िया चुग गई खेत, अपने ही ग्रह खोटे, पाला पड़ना, जुगाड़ बिठाना, त्यौरी चढ़ाना आदि मुहावरे–लोकाक्तियों का सफल प्रयोग किया है।

ख) शब्द–शक्तियाँ –

शब्द के अर्थ को अभिव्यक्त करने वाली शक्ति शब्द–शक्ति कहलाती है। कवि चेतन–अवचेतन सभी भावों के साथ रागात्मक सम्बन्धों का निर्वाह करने हेतु कल्पना का आश्रय लेता है। तब शब्द–शक्ति ही उसकी कल्पना को मूर्तरूप प्रदान करने में सहायक होती है। शब्द–शक्तियाँ तीन प्रकार की होती हैं – अभिधा, लक्षणा एवं व्यंजना, जो क्रमशः वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ और व्यंग्यार्थ को प्रकट करती है।

अभिधा –

शब्द के संकेतित अथवा मुख्यार्थ का बोध कराने वाली शक्ति का अभिधा तथा जिस व्यापार द्वारा इस अर्थ का बोध होता है – उसे अभिधेयार्थ अथवा वाच्यार्थ कहते हैं।[17] 'तरूण–काव्य' में अभिधा विधान द्वारा भाव और चित्र का अनुपम रूपविद्यमान है। 'एकान्त क्षणों में' शीर्षक कविता में अभिधा के माध्यम से ग्रामीण संध्या का चित्ररूप पस्तुत किया गया है –

गन्ने के खेतों पर से हो एक रागिनी देहाती

किसी कंठ से फूट आ रही प्राणों को सिहराती

इधर–उधर है दीन घरों में म्लान दीपक टिमटिम रहे

दूरी पर है श्वान भूंकते, तम की छाया कंप जाती।[18]

लक्षणा –

मुख्यार्थ के बाधित होने पर रूढ़ि या प्रयोजन से, मुख्यार्थ से किसी अन्य अर्थ की प्रतीति होती है, उसे लक्षणा कहते हैं।[19] 'तरूण–काव्य' में लाक्षणिक प्रयोगों की बहुलता है। 'बीज–वह अनादि' शीर्षक कविता में नरभक्षी वृक्ष की रूढ़ि के माध्यम से लक्षणा–प्रयोग किया गया है। वस्तुतः यहाँ नरभक्षी वह विकृत व्यवस्था है, जो मानव को निगल जाती है–

तने को घेरे मोटी–मोटी अजगरी जटाएँ लटकी हुई हैं।

नरभक्षी –

जो भी पास जावे उसे अपने शिकंजे–ग्राइण्डर में पीसकर निचोड़

गटागट रक्त पी जाने के लिए

अट्टहास के साथ।[20]

व्यंजना –

संयोग आदि के द्वारा अनेकार्थ शब्दों के (किसी एक अर्थ में) नियन्त्रित हो जाने पर (उससे भिन्न) आवाच्य अर्थ की प्रतीति कराने वाला (शब्द का) व्यापार व्यंजना कहलाता है।[21] डॉ॰ निर्मला जैन का कथन है कि 'भाषा की जिस शक्ति से रसात्मक काव्य की सृष्टि होती है, उसे व्यंजना कहा गया है।[22] 'तरूण–काव्य' मे व्यंजना शब्द–शक्ति का इतना अधिक प्रयोग हुआ है कि उनकी भाषा–शैली का अभिन्न अंग बन गई है। युग संत्रास, जीवन–विसंगतियों की अभिव्यक्ति हेतु कवि व्यंजना का ही आश्रय लेते हैं। 'डेमोक्रेसी' शीषर्क कविता में व्यंजना के माध्यम से प्रजातान्त्रिक व्यवस्था को बेनकाब करते हुए, वोटों की खरीद–फरोख्त पर पैना व्यंग्य किया गया है–

लो अब गिन लो हाथ

\+ + +

हो गया न सिद्ध –

सूरज बदमाश है –

कितना अन्यायी –

बेचारे अन्धेरे को तबाह कर दिया।[23]

वस्तुतः 'तरूण–काव्य' में शब्द–शक्तियों का सफल प्रयोग हुआ है। कवि की अनुपम सृजन शक्ति अभिधा का प्रयोग करने पर भी काव्य को नीरस नहीं होने देती। प्रकृतिपरक कविताओं में लाक्षणिक प्रयोग सौन्दर्यवृद्धि करते हैं तो व्यंजना के माध्यम से विसंगतियों भरे जीवन का कटु यथार्थ प्रभावशाली ढंग से मुखर ही नहीं होता, बल्कि पाठकों को चिन्तन–मनन हेतु विवश भी करता है।

भाषा रचना के प्रयोग –

भाषा भावों की वाहिका है। भावों का स्पष्ट और प्रभावी प्रयोग भाषा पर ही अवलम्बित है। अतः भाषा को भावानुरूप बनाने के लिए कवि काव्यवस्तु की प्रकृति एवं परिवेश अनुसार भाषा में परिवर्तन करता रहता है। महादेवी वर्मा के अनुसार – 'भाषा केवल संकेत लिपि नहीं है, प्रत्युत उसके हर शब्द के पीछे संकेतित वस्तु स्पन्दित रहती है और प्रत्येक शब्द का एक सजीव इतिहास होता है। अतः एक जीवित भाषा का जीवन के साथ ही विकसित और परिमार्जित होते चलना स्वाभाविक है।[24] वस्तुत भाषा की जीवन्तता ही इसमें है कि वह वस्तु–प्रकृति एवं युग चेतना के अनुरूप परिवर्तित व विकसित होती रहे। डॉ॰ तरूण की दीर्घकालीन काव्य–यात्रा में भाषायी स्तर पर अनेक मोड़ आए हैं। भावबोध के बहुविध आयामों का संस्पर्श करने के साथ–साथ 'तरूण' की सर्जनात्मक शक्ति भाषा को भी युगानुरूप एवं भावानुरूप विकसित करती गई है। उनकी पारम्भिक कृतियों 'प्रथम किरण' व 'हिमांचला' की भाषा में द्विवेदीयुगीन इतिवृत्तात्मकता एवं छायावादी भाषायी गुण (माधुर्य, कोमलकान्त पदावली, उपचार वक्रता) दृष्टिगोचर होते हैं।

राष्ट्र महिमा गान हेतु कवि ने इतिवृत्तात्मक शैली का आश्रय लिया है। उदाहरणतः–

प्रथम सभ्यता के उन्नायक, युग–युग की महिमा से मण्डित

शुद्ध ज्ञान का आदि स्त्रोत यह महादेश प्राचीन अखण्डित।[25]

साथ ही उनकी रचनाओं में छायावादी भाषा के गुण यथा उपचार, वक्रता, माधुर्य, कोमलकान्त पदावली, मृदता भी विद्यमान है –

यह चाँद जिधर से आता है –

उस ओर कहीं पर अंगूरी रस का सागर लहराता है।

\+ + + + + +

छमछम करती है अप्सरियाँ

मंजीर बजाती किन्नरियाँ

गाती नवला हिम–कन्याएँ, शशि हीरक चूर उड़ाता है।

यह चाँद जिधर से आता है।[26]

उपरोक्त पंक्तियों में मृदुता, अनुप्रासात्मकता, माधुर्य, चित्रात्मकता एवं कोमकान्त पदावली का प्रयोग हुआ है, जो छायावादी प्रभाव का परिचायक है।

लेकिन कवि की परवर्ती रचनाओं में बदलती हुई संवेदना के अनुरूप ही अभिव्यक्ति का तेवर भी बदला है। आधुनिक जीवन की विसंगतियों, विद्रूपताओ, मिथ्याचारों की अभिव्यक्ति करते समय भाषा भी विषयानुरूप व्यंग्यपूर्ण, तीखी, नुकीली, काँटेदार व चुभने वाली बन गई है। कविवर अज्ञेय का इस संदर्भ में कथन है – यथार्थ की भूमि पर जो काव्य खड़ा है, उसका माध्यम यथार्थ भाषा ही हो सकती है, शब्दकोश की भाषा नहीं।[27] कवि ने समकालीन विसंगतियों के लिए समकालीन प्रचलित शब्दों को ही ग्रहण किया है –

निर्वसन, नंग–धड़ंग–सा व जीभ चटखारता

हाथ में बंदूक लिये चला आ रहा है –

यह बीसवो सदी का आदमी –

डार्विन का जीवित वनमानुष

बाईस संस्कृतियों का यह साक्षात परिपक्व फल

पूरे बाट परे सरकावे, बेगा–बेगा बोले,

लीडर, डिप्लोमेट एकेडेमिशियन

कुशाग्र, फुर्तीला और इंटैलिजैंट।[28]

उपरोक्त पंक्तियों में आधुनिक मानव के विकृत रूप के अंकन हेतु समकालीन शब्दावली का प्रयोग किया गया है –

इसी तरह सपाटबयानी द्वारा युगीन यथार्थ की सशक्त अभिव्यक्ति देखिए ———

कीड़ों से खाये जाते, वासना लोलुप, रक्त टपकाते

हड़के कुत्तों के

जबड़ों में पहुँच गया है रे – अब यह मेरा देश,

यहाँ से वहाँ।[29]

कवि की भाषा भावानुरूपिणी है। कवि ने सूक्ष्म व कोमल भावों की अभिव्यक्ति हेतु माधुर्य गुण सम्पन्न भाषा एवं कोमलकान्त पदावली का प्रयोग किया है। उदाहरणतः –

मद भरे, उजले रतनारे

मीन–से चंचल, कजरारे

सीप से चौड़े, अनियारे –

नयन से रस लहराता है।[30]

पौरूषपूर्ण एवं गम्भीर भावों को व्यक्त करने हेतु कवि ने ओजस्वी भाषा का प्रयोग किया है। 'शक्ति का सौन्दर्य स्वप्न' कविता इसका उत्कृष्ट उदाहरण है –

ए श्याम–नील गर्जनकारी चंचल दिगन्त व्यापी समुद्र,

इस निर्जन में क्यों गरज रहे धारण कर ऐसा रूप रूद्र।

इस महानील नभ के नीचे निशि दिन तुम हो जलनिधि अपार,

क्यों करते हाहाकार विपुल अन्तर्पीड़ा का लिए भार।[31]

विद्रोह, युग संत्रास एवं उद्बोधन विषयक कविताओं में ऐसी ही भाषा का प्रयोग हुआ है। चित्रात्मक एवं ध्वन्यात्मकता किसी भी कवि की भाषा की प्रभुविष्णुता एवं सम्प्रेषणीयता में वृद्धि करते हैं। कविवर 'तरूण' की भाषा में यह गुण सर्वत्र विद्यमान हैं। डॉ॰ शान्तिस्वरूप गुप्त के अनुसार – 'तरूण' का काव्य चित्र प्रधान है। उनके काव्य का आदर्श चित्रकला है, उनके काव्य में भावाभिव्यक्ति का माध्यम चित्रमयी भाषा है। उनके शब्द बिम्बधर्मी हैं – वर्ण्य–विषय को मूर्त्त रूप देने और उसे भावमय बनाने में अभिव्यंजना शक्ति विशेष पटु हैं।[32] चित्रात्मकता एवं ध्वन्यात्मकता गुणों से युक्त भाषा का एक उदाहरण देखिए –

बैठी है धेनु–मुँद–दृग–छाया चित्रित,

कर रही जुगाली फेनिल–मुख अति उन्मन,

उठ पड़ती सहसा कभी मशक–दंशन से,

ग्रीव–घंटी बजती मंजुल टुन टिन् टिन्।[33]

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि कविवर 'तरूण' कुशल भाषा शिल्पी है। अपनी लम्बी काव्य–यात्रा में उन्होंने न केवल छायावादी तत्सम प्रधान भाषा का प्रयोग किया, साथ ही भाषा के सहज रूप को भी स्वीकृति दी। मुहावरे और लोकोक्तियों के प्रयोग द्वारा भाषा को सबलता एवं प्रवाहमयता प्रदत्त की है। चित्रात्मकता, ध्वन्यात्मकता, अनुप्रासात्मकता, माधुर्य, भावानुरूपता, इतिवृत्तात्मकता, व्यंजनात्मकता, लाक्षणिकता उनकी भाषा की प्रमुख विशिष्टताएँ है।

वस्तुतः संवेदना के अनुरूप ही कवि की भाषा का तेवर परिवर्तनशील, प्रभावी एवं सहज है।

संन्दर्भ–सूची

1. सं॰ पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' : 'निराला' (अम्बाप्रसाद सुमन आलेख) – पृ॰ 213
2. श्यामविहारी रायः शुक्लोत्तर काव्य चिन्तन : पाश्चात्य परिप्रेक्ष्य', – पृ॰ 186
3. शम्भुनाथ सिंह : 'छायावाद युग', – पृ॰ 293
4. डॉ॰ रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरूण' : तरूण काव्य ग्रन्थावली', – पृ॰ 159
5. डॉ॰ भोलानाथ तिवारी : 'शैली विज्ञान', – पृ॰ 69
6. डॉ॰ रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरूण' : तरूण काव्य ग्रन्थावली', (अपनी बात) – पृ॰ 29
7. डॉ॰ रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरूण' : तरूण काव्य ग्रन्थावली', – पृ॰ 342–343
8. सं॰ डॉ॰ हरिश्चन्द्र वर्मा : 'कवि तरूण का काव्य संसार', पृ॰ 241
9. डॉ॰ रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरूण' : तरूण काव्य ग्रन्थावली', – पृ॰ 394
10. डॉ॰ रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरूण' : तरूण काव्य ग्रन्थावली', – पृ॰ 184
11. सं॰ डॉ॰ हरिश्चन्द्र वर्मा : 'कवि तरूण का काव्य संसार', पृ॰ 96
12. डॉ॰ रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरूण' : तरूण काव्य ग्रन्थावली', – पृ॰ 44

13. सं॰ डॉ॰ ओमानन्द रू सारस्वत : 'कविवर तरूण : सृजन के चरण', पृ॰ 156

14. डॉ॰ रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरूण' : तरूण काव्य ग्रन्थावली', – पृ॰ 22

15. डॉ॰ रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरूण' : तरूण काव्य ग्रन्थावली', – पृ॰ 46

16. डॉ॰ रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरूण' : तरूण काव्य ग्रन्थावली', – पृ॰ 49

17. डॉ॰ लालता प्रसाद सक्सेना : 'मंझन का सौन्दर्य दर्शन', – पृ॰ 139

18. डॉ॰ रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरूण' : तरूण काव्य ग्रन्थावली', – पृ॰ 140

19. डॉ॰ लालता प्रसाद सक्सेना : 'मंझन का सौन्दर्य दर्शन', – पृ॰ 139

20. डॉ॰ रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरूण' : तरूण काव्य ग्रन्थावली', – पृ॰ 24

21. डॉ॰ लालता प्रसाद सक्सेना : 'मंझन का सौन्दर्य दर्शन', – पृ॰ 139

22. डॉ॰ निर्मला जैन : 'रस सिद्धान्त और सौन्दर्यशास्त्र', – पृ॰ 338

23. डॉ॰ रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरूण' : तरूण काव्य ग्रन्थावलो', – पृ॰ 101

24. महादेवी वर्मा : 'क्षणदा', – पृ॰ 107

25. डॉ॰ रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरूण' : तरूण काव्य ग्रन्थावली', – पृ॰ 317

26. डॉ॰ रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरूण' : तरूण काव्य ग्रन्थावली', – पृ॰ 268

27. सं॰ डॉ॰ हरिश्चन्द्र वर्मा : 'कवि तरूण का काव्य संसार', पृ॰ 95

28. डॉ॰ रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरूण' : तरूण काव्य ग्रन्थावली', – पृ॰ 44

29. डॉ॰ रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरूण' : तरूण काव्य ग्रन्थावली', – पृ॰ 38

30. डॉ॰ रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरूण' : तरूण काव्य ग्रन्थावली', – पृ॰ 282

31. डॉ॰ रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरूण' : तरूण काव्य ग्रन्थावली', – पृ॰ 202

32. डॉ॰ शान्तिस्वरूप गुप्त : 'कवि तरूण : दृष्टि और सृष्टि', – पृ॰ 38

33. डॉ॰ रामेश्वर लाल खण्डेलवाल 'तरूण' : तरूण काव्य ग्रन्थावली', – पृ॰ 174